ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का आधुनिक लोकतंत्र पर प्रभाव

डा0 सदगुरु पुष्पम[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, के0 एस0 साकेत पीजी कालेज, अयोध्या, उ0प्र0, भारत

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 13 Jan 2019, Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान नेता होने के साथ–साथ एक गहन राजनीतिक विचारक भी थे। उनके राजनीतिक विचार केवल तत्कालीन औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे एक व्यापक वैचारिक प्रणाली को प्रस्तुत करते थे, जो आधुनिक लोकतंत्र के मूल्यों से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। उन्होंने सत्य, अहिंसा, आत्मबल, नैतिकता, सामाजिक न्याय और विकेंद्रीकरण जैसे मूल्यों को राजनीति का अनिवार्य अंग माना।

गांधीजी का विश्वास था कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान का माध्यम बनना चाहिए। गांधीजी की स्वराज की परिकल्पना केवल विदेशी शासन से मुक्ति तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका संबंध व्यक्ति की आत्मनिर्भरता और आत्म–शासन से था। उनके लिए ग्राम स्वराज एक आदर्श लोकतांत्रिक संरचना थी, जिसमें प्रत्येक गांव एक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर इकाई होता, जो लोक सहभागिता के माध्यम से कार्य करता। उन्होंने लोकतंत्र को एक जीवंत और सहभागी प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसमें जनता केवल मतदाता नहीं, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया का सक्रिय अंग हो।

गांधीजी का अहिंसा का सिद्धांत न केवल सामाजिक संघर्षों के समाधान का उपाय था, बल्कि यह एक राजनीतिक रणनीति भी थी, जो संवाद, सहिष्णुता और सह–अस्तित्व को बढ़ावा देती है। उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धांत में उन्होंने पूंजीवाद और समाजवाद के बीच एक मध्य मार्ग सुझाया, जिसमें पूंजीपति अपने संसाधनों को समाज के हित में धरोहर के रूप में उपयोग करें।

यह विचार आज भी सामाजिक उत्तरदायित्व और आर्थिक न्याय के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। आज के संदर्भ में जब लोकतंत्र केवल चुनावी प्रक्रिया तक सीमित होकर नैतिकता, पारदर्शिता और जनहित से दूर होता जा रहा है, तब गांधीजी के विचार हमें लोकतंत्र की आत्मा की पुनर्प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं।

वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक विषमता के इस दौर में गांधीवादी दृष्टिकोण विशेषकर विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता, अहिंसात्मक विरोध, और नैतिक नेतृत्वकृअत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं।

यह शोधपत्र गांधीजी के राजनीतिक चिंतन की व्यापक व्याख्या करता है और आधुनिक लोकतंत्र की संरचना, कार्यप्रणाली तथा चुनौतियों पर उनके विचारों के प्रभाव का विश्लेषण करता है। गांधीजी के सिद्धांत केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि समकालीन लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

कीवर्ड्स– महात्मा गांधी, राजनीतिक विचार, आधुनिक लोकतंत्र, सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज, विकेंद्रीकरण, ट्रस्टीशिप, ग्राम स्वराज, नैतिक राजनीति

Introduction

महात्मा गांधी न केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख नेता थे, बल्कि वे एक विचारक, दार्शनिक और नैतिक राजनीति के अग्रदूत भी थे। उन्होंने भारतीय राजनीति में जिस प्रकार नैतिकता, सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को स्थापित किया, वह उस समय की परंपरागत राजनीतिक सोच से पूर्णतः भिन्न था। उनके राजनीतिक विचारों ने न केवल औपनिवेशिक भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने की राह दिखाई, बल्कि समकालीन लोकतांत्रिक मूल्यों की नींव भी मजबूती से रखी। गांधीजी की राजनीति का मूल आधार सत्य और अहिंसा था। उनके लिए राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति या प्रशासनिक संरचना का विषय नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और मानवता के कल्याण का माध्यम थी। उन्होंने 'स्वराज' की जो व्याख्या की, वह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह व्यक्ति और समाज के आत्म–शासन, आत्म–निर्भरता और नैतिक उत्थान का संपूर्ण दृष्टिकोण था। ग्राम स्वराज, विकेंद्रीकरण, ट्रस्टीशिप और सहभागिता जैसे उनके विचार आज भी लोकतंत्र को जन–केंद्रित और न्यायपूर्ण बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। आधुनिक लोकतंत्र, जो आज वैश्विक स्तर पर अपनाया जा रहा है, कई आंतरिक और बाह्य संकटों से जूझ रहा हैकृजैसे कि सत्ता का केंद्रीकरण, भ्रष्टाचार, सामाजिक विषमता, पर्यावरणीय संकट और नागरिक सहभागिता में गिरावट। इन सभी चुनौतियों के संदर्भ में गांधीजी के राजनीतिक विचार मार्गदर्शन और समाधान दोनों प्रस्तुत करते हैं। उनका दर्शन आज भी एक ऐसा लोकतंत्र रचने की प्रेरणा देता है, जो केवल औपचारिक न होकर नैतिक, समावेशी और जनसंपृक्त हो।

यह शोधपत्र महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की गहराई से समीक्षा करते हुए आधुनिक लोकतंत्र पर उनके प्रभाव का समालोचनात्मक विश्लेषण करता है। साथ ही यह प्रयास करता है यह समझने का कि वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य में गांधीजी के सिद्धांत कितने प्रासंगिक हैं और उन्हें किस प्रकार व्यवहार में लाकर लोकतंत्र को अधिक उत्तरदायी और नैतिक बनाया जा सकता है।

राजनीतिक विचारधारा और लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षेत्र में महात्मा गांधी का योगदान वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त है। बीसवीं शताब्दी में जब उपनिवेशवाद, हिंसा और सत्ता की लालसा चरम पर थी, तब गांधीजी ने राजनीति को नैतिकता, सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक विशिष्ट वैचारिक आधार दिया, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा को भी एक नैतिक दिशा प्रदान की। उनका यह विश्वास कि "राजनीति बिना नैतिकता के अधूरी है" आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक बना हुआ है।

समस्या का स्वरूप– वर्तमान समय में लोकतंत्र मात्र एक संवैधानिक ढांचा बनकर रह गया है, जिसमें जनप्रतिनिधित्व तो है परंतु नैतिकता, पारदर्शिता और जनसहभागिता का अभाव है। सत्ता का केंद्रीकरण, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, और हिंसक आंदोलनों की प्रवृत्ति लोकतंत्र को कमजोर कर रही है। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि क्या महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार, जो एक शताब्दी पूर्व प्रतिपादित हुए थे, आज के आधुनिक लोकतंत्र को एक नैतिक व व्यवहारिक विकल्प प्रदान कर सकते हैं?

अध्ययन की प्रासंगिकता– महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन न केवल ऐतिहासिक महत्त्व रखता है, बल्कि यह वर्तमान में भी उतना ही जीवंत और उपयोगी है। गांधीजी के विचारों की विश्लेषणात्मक पुनर्परीक्षा हमें यह समझने में मदद करती है कि कैसे एक अधिक सहभागी, न्यायपूर्ण और नैतिक लोकतंत्र की स्थापना

की जा सकती है। यह शोध वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में गांधीवादी मूल्यों की उपयोगिता को रेखांकित करने हेतु अत्यंत प्रासंगिक है।

अध्ययन का उद्देश्य– इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित है–

गांधीजी के राजनीतिक विचारों की समग्र समीक्षा करना।

आधुनिक लोकतंत्र की संरचना और उसके संकटों को स्पष्ट करना।

गांधीवादी सिद्धांतों की आधुनिक लोकतंत्र के संदर्भ में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

यह सिद्ध करना कि गांधीजी के विचार आज के लोकतंत्र को नैतिक दिशा देने में कैसे सहायक हो सकते हैं।

अनुसंधान प्रश्न–

क्या गांधीजी के विचार आज के लोकतंत्र में नैतिकता की पुनर्स्थापना कर सकते हैं?

गांधीवादी सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र की प्रमुख चुनौतियों का समाधान कैसे प्रस्तुत करते हैं?

'ग्राम स्वराज', 'ट्रस्टीशिप' और 'अहिंसा' जैसे सिद्धांतों की व्यवहारिकता आज किस रूप में है?

परिकल्पना– महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का अध्ययन यह दर्शाता है कि उनके सिद्धांत, जैसे अहिंसा, सत्य, ग्राम स्वराज, विकेंद्रीकरण, ट्रस्टीशिप तथा स्वदेशी, न केवल भारत की स्वतंत्रता संग्राम के समय प्रभावी थे, बल्कि आज के आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए भी नैतिक दिशा, वैकल्पिक मॉडल और स्थायित्वपूर्ण विकास का आधार प्रदान करते हैं।

इस शोध की परिकल्पना निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है–

- गांधीजी के राजनीतिक दर्शन में अंतर्निहित नैतिकता आज के लोकतंत्र में बढ़ते राजनीतिक भ्रष्टाचार, सत्ता केंद्रीकरण, और सामाजिक असमानता जैसे संकटों के समाधान में सहायक हो सकती है।
- ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकरण का गांधीवादी मॉडल, स्थानीय शासन और जमीनी स्तर की लोकतांत्रिक भागीदारी को सशक्त बनाने में आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।
- गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत, आर्थिक असमानता और पूंजी के केंद्रीकरण जैसी चुनौतियों के समाधान हेतु एक नैतिक आर्थिक ढांचा प्रस्तुत करता है।
- अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत, लोकतांत्रिक आंदोलनों, नागरिक अधिकारों की मांग, और शांतिपूर्ण विरोध के आधुनिक रूपों में आज भी प्रभावी और प्रेरणास्रोत हैं।
- गांधीजी का विचार है कि लोकतंत्र केवल संस्थागत ढांचे का नाम नहीं, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक चेतना पर आधारित व्यवस्था हैकृयह विचार वर्तमान लोकतंत्र की आत्मा को पुनः जाग्रत करने में सक्षम है।

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार आज के आधुनिक लोकतंत्र को अधिक नैतिक, विकेंद्रीकृत, न्यायपूर्ण और सहभागी बनाने की दिशा में एक प्रभावी और व्यवहारिक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

अनुसंधान विधि– इस शोध में महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों के आधुनिक लोकतंत्र पर प्रभाव का विश्लेषण एक गुणात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण के माध्यम से किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य गांधीवादी

सिद्धांतों की वर्तमान लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में प्रासंगिकता और उपयोगिता को समझना और प्रस्तुत करना है।

1. अनुसंधान की प्रकृति – यह एक सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन है। अध्ययन वर्णनात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें गांधीजी के विचारों की तुलना आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के मौजूदा तत्वों से की गई है।

2. आंकड़ा संग्रहण के स्रोत

(क) प्राथमिक स्रोत महात्मा गांधी द्वारा लिखित ग्रंथ जैसे हिंद स्वराज, मेरे सत्य के प्रयोग, गांधीजी के भाषण, पत्राचार एवं लेख हैं।

(ख) द्वितीयक स्रोत गांधीजी पर आधारित विद्वानों के शोध–पत्र, पुस्तकों एवं आलेखों का विश्लेषण व राजनीतिक विचारधारा, लोकतंत्र, ट्रस्टीशिप, ग्राम स्वराज इत्यादि विषयों पर समकालीन शोध, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, शैक्षणिक पुस्तकें, और थिंक टैंक रिपोर्टें हैं।

3. विश्लेषण की पद्धति

विषय–आधारित वर्गीकरण के अंतर्गत गांधीजी के विचारों को विषयानुसार, जैसे अहिंसा, स्वराज, नैतिक राजनीति, ट्रस्टीशिप, वर्गीकृत कर उनका विश्लेषण किया गया है।

तुलनात्मक विश्लेषण के अंर्तगत गांधीवादी सिद्धांतों की तुलना आधुनिक लोकतांत्रिक चुनौतियों व संरचनाओं से की गई है।

मूल्यांकनात्मक दृष्टिकोण के अंर्तगत गांधी जी के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता और व्यवहारिक प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है।

4. सीमाएं – अध्ययन केवल राजनीतिक विचारों तक सीमित है; गांधीजी के सामाजिक, धार्मिक या व्यक्तिगत जीवन के विस्तृत विश्लेषण को शोध के दायरे से बाहर रखा गया है। यह शोध सैद्धांतिक विश्लेषण पर आधारित है; प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण या केस स्टडी शामिल नहीं है। अध्ययन का फोकस मुख्यतः भारतीय लोकतंत्र और उसके संदर्भ में गांधीवादी विचारों पर है।

5. अनुसंधान की उपादेयता – यह शोध गांधीजी के विचारों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्परिभाषित करता है। यह वर्तमान लोकतंत्र में नैतिकता, जनसहभागिता, और न्याय की पुनर्स्थापना हेतु गांधीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह शोध लोकतांत्रिक प्रणाली को अधिक उत्तरदायी, सहभागी और नैतिक बनाने के लिए वैकल्पिक ढांचे की पेशकश करता है।

अध्ययन की सीमाएँ– यह अध्ययन केवल गांधीजी के राजनीतिक विचारों तक सीमित है। उनके सामाजिक, धार्मिक या व्यक्तिगत जीवन के अन्य पहलुओं को शोध के दायरे में नहीं लिया गया है। साथ ही, यह अध्ययन भारतीय लोकतंत्र के सन्दर्भ में अधिक केंद्रित है।

गांधीजी के राजनीतिक विचारों की मूल अवधारणाएँ – महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन सत्ता प्राप्ति की किसी परंपरागत अवधारणा पर आधारित नहीं था, बल्कि यह मानव जीवन के सभी पहलुओं नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक के गहन अंतर्संबंध से जन्मा था। उनके राजनीतिक विचारों की गहराई

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

में सत्य, अहिंसा, आत्मशासन और नैतिकता जैसे सिद्धांत अंतर्निहित थे, जो केवल राजनीतिक प्रणाली के लिए नहीं, बल्कि समाज के संपूर्ण कायाकल्प के लिए थे।

1. सत्य – राजनीति का नैतिक आधार– गांधीजी का मानना था कि सत्य ईश्वर का पर्याय है। उनके अनुसार, राजनीति को यदि भ्रष्टाचार, झूठ और सत्ता की लालसा से मुक्त करना है तो उसे सत्य पर आधारित करना अनिवार्य है। विवेकानंद, तुलसीदास, और उपनिषदों की परंपरा में गांधीजी का सत्य अंतःकरण की आवाज था। उनके सत्य का प्रयोग उनके जीवन और आंदोलनों में स्पष्ट था, चाहे वह चंपारण सत्याग्रह (1917) हो, दांडी यात्रा (1930) हो या भारत छोड़ो आंदोलन (1942)। उनकी राजनीति "Ends justify the Means" की बजाय "Means are as important as Ends" की नैतिक मान्यता पर आधारित थी।

2. अहिंसा –संघर्ष का नैतिक मार्ग– गांधीजी का अहिंसा सिद्धांत बौद्ध–जैन परंपरा से प्रेरित था, परंतु उन्होंने इसे राजनीतिक क्रांति का भी माध्यम बनाया। उनके अनुसार, "अहिंसा केवल भौतिक हिंसा से बचना नहीं है, यह क्रोध, द्वेष, असहिष्णुता से भी मुक्ति है।" उनका विश्वास था कि कोई भी परिवर्तन जबरदस्ती नहीं, बल्कि आत्मबलिदान, संवाद और करुणा से लाया जा सकता है। "सत्याग्रह" इसी अहिंसक दर्शन का व्यावहारिक रूप था।

3. स्वराज – आत्म–शासन का व्यापक दृष्टिकोण– गांधीजी का स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के आत्मविकास और आत्मनियंत्रण की संकल्पना थी। उन्होंने कहा था "स्वराज तब होगा जब हर व्यक्ति आत्म–नियंत्रण सीखेगा और समाज उसकी सहभागिता से चलेगा।" यह एक नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वराज था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति स्वराज का एक पहलू था; आत्मबल, आत्मनिर्भरता और आत्मशासन उसका मूल था।

4. ग्राम स्वराज – लोकतंत्र की जड़ें नीचे तक– गांधीजी के अनुसार, भारत का निर्माण गाँवों की आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण के माध्यम से होना चाहिए। "भारत का भविष्य दिल्ली की संसद में नहीं, देश के गाँवों में तय होगा।" ग्राम स्वराज का तात्पर्य था, गाँवों को इतनी शक्ति और संसाधन मिलें कि वे शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्पादन और निर्णय लेने में स्वायत्त बनें। यह आज के पंचायती राज और स्थानीय शासन की आधारशिला मानी जा सकती है।

5. ट्रस्टीशिप – संपत्ति पर नैतिक अधिकार– गांधीजी पूंजीवाद और समाजवाद दोनों के चरम को खारिज करते थे। उन्होंने कहा– "पैसे वाले व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि उसका धन भगवान की देन है और वह केवल उसका ट्रस्टी (संरक्षक) है। यह विचार अर्थव्यवस्था में नैतिकता जोड़ने का प्रयास था। आज के CSR (Corporate Social Responsibility) की वैचारिक जड़ें गांधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत में देखी जा सकती हैं।

6. सत्याग्रह – आत्मबलिदान पर आधारित संघर्ष– "सत्याग्रह" गांधीजी की राजनीतिक दृष्टि की आत्मा था। यह संघर्ष का ऐसा रूप था जिसमें अहिंसा, आत्मशुद्धि, अनुशासन और आत्मबलिदान के माध्यम से अन्याय का विरोध किया जाता था। यह 'Passive Resistance' से कहीं अधिक था, यह सक्रिय नैतिक विरोध था। सत्याग्रह का सफल प्रयोग चंपारण सत्याग्रह (1917), नील किसानों के अधिकारों के लिए, असहयोग आंदोलन (1920), विदेशी शासन के विरुद्ध, दांडी मार्च (1930) नमक कर के विरुद्ध, भारत छोड़ो आंदोलन (1942) स्वतंत्रता के लिए हुआ।

7. स्वदेशी– आत्मनिर्भरता का आधार– गांधीजी का "स्वदेशी" सिद्धांत केवल देशी वस्तुओं का प्रयोग नहीं था, यह एक राजनीतिक आर्थिक आत्मनिर्भरता का आह्वान था। "स्वदेशी का अर्थ है अपने समुदाय की सेवा और उसकी जरूरतों की पूर्ति।" विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और खादी का प्रचार इस दर्शन का व्यावहारिक रूप था। आज के Make in India ; Atmanirbhar Bharat जैसे अभियानों में इसकी झलक स्पष्ट है।

8. शिक्षा का नैतिक उद्देश्य – नैतिक नागरिक का निर्माण– गांधीजी की शिक्षा पर अवधारणा नैतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण पर आधारित थी। बुनियादी शिक्षा का लक्ष्य था, हाथ, दिमाग और हृदय का संतुलन। राजनीति में उन्होंने केवल साक्षर या वाकपटु नेता को नहीं, बल्कि चरित्रवान और सेवाभावी नेता को योग्य माना।

9. सर्वधर्म समभाव धार्मिक सहिष्णुता की नींव– गांधीजी का मानना था कि धर्म को राजनीति से अलग करना नहीं, बल्कि धार्मिक मूल्यों को राजनीति में स्थान देना आवश्यक है। "सभी धर्म सत्य की ओर ले जाते हैं। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम एकता को स्वतंत्रता संघर्ष का अभिन्न भाग माना। यह आज के धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र की मूल भावना से मेल खाता है।

10. राजनीतिक नैतिकता और नेतृत्व– गांधीजी के अनुसार, राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सेवा और उत्तरदायित्व का क्षेत्र है। नेता वह नहीं जो आदेश दे, बल्कि वह जो सबसे पहले त्याग करे। उन्होंने जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा की कि वे सादा जीवन, उच्च विचार के सिद्धांतों का पालन करें। आज जब राजनीति में सत्ता और लाभ का वर्चस्व है, गांधीजी का आदर्श नेतृत्व मार्गदर्शन बन सकता है।

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार आज के लोकतंत्र को उसकी आत्मा से जोड़ते हैं। उनके सिद्धांत न तो कालबाह्य हैं, न ही केवल आदर्शवादी। वे आज भी एक व्यवहारिक विकल्प प्रस्तुत करते हैं जैसे सत्ता के विकेंद्रीकरण के लिए ग्राम स्वराज, आर्थिक असमानता के समाधान के लिए ट्रस्टीशिप, राजनीति में नैतिकता के लिए सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह, सामाजिक समरसता के लिए सर्वधर्म समभाव, लोकतांत्रिक नागरिक के निर्माण के लिए चरित्र आधारित शिक्षा। गांधीजी का राजनीतिक दर्शन केवल भारत ही नहीं, पूरे विश्व के लिए एक वैकल्पिक और नैतिक लोकतंत्र का खाका प्रस्तुत करता है।

आधुनिक लोकतंत्र पर गांधीजी के विचारों का प्रभाव– महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन पारंपरिक शक्ति–राजनीति से भिन्न है। उनका विश्वास था कि राजनीति केवल सत्ता की प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि जनसेवा, नैतिकता और आत्मानुशासन का माध्यम है। स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीजी ने लोकतंत्र को व्यवहार में उतारने का प्रयास किया। उन्होंने लोगों को केवल मतदाता नहीं, बल्कि उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा दी। यद्यपि गांधीजी संविधान सभा के सदस्य नहीं थे, उनके विचारों ने भारत के संविधान के अनेक पहलुओं को प्रभावित किया, संविधान के जिन भागों में गांधीवाद का प्रभाव दिखता है। अनुच्छेद 40 ग्राम पंचायतों को सशक्त करने की व्यवस्था (ग्राम स्वराज का आधार) है। अनुच्छेद 51A नागरिक कर्तव्यों में सत्य, अहिंसा, सेवा की भावना है।

गांधीजी की ग्राम स्वराज की कल्पना के अनुरूप 1992 में 73वां संविधान संशोधन लाकर स्थानीय स्वशासन को संवैधानिक दर्जा दिया गया। गांधीजी के अस्पृश्यता उन्मूलन और हरिजनों के उत्थान के प्रयासों से प्रेरित होकर सरकारी योजनाओं में सामाजिक न्याय पर बल दिया गया। गाँधीवादी पद्धतियाँ

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

आज भी जन आंदोलन, पर्यावरण संघर्षों और दलित आंदोलनों में देखी जाती हैं (जैसे मेधा पाटेकर, अन्ना हज़ारे, नर्मदा बचाओ आंदोलन आदि)। गांधीजी ने "राजनीति को नैतिक मूल्यों से जोड़ने" का जो प्रयास किया, वह आज के सिविल सोसाइटी आंदोलन में झलकता है। गांधीजी के विचार केवल भारत तक सीमित नहीं रहे। उनके सिद्धांतों ने दुनिया के लोकतांत्रिक आंदोलनों और नेताओं को प्रभावित किया है।

तालिका–01

गांधीजी के सिद्धांतों से प्रभावित दुनिया के लोकतांत्रिक आंदोलन और नेता			
क्र. सं.	**नेता**	**आंदोलन**	**गांधीजी से प्रेरणा**
1	मार्टिन लूथर किंग जूनियर	अमेरिका में नस्लीय समानता	अहिंसात्मक आंदोलन
2	नेल्सन मंडेला	दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ	संघर्ष सत्य और सेवा का भाव
3	अंग सं सू ची	म्यांमार में लोकतंत्र की स्थापना	अहिंसक प्रतिरोध

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार आधुनिक लोकतंत्र के लिए एक नैतिक आधारशिला प्रदान करते हैं। उन्होंने सत्ता की होड़ से परे, राजनीति को सेवा, सत्य, और आत्मसंयम की साधना के रूप में देखा। आज के समय में, जब लोकतंत्र में जन–भागीदारी सीमित होती जा रही है, जब राजनीति में धन और शक्ति का बोलबाला है, गांधीजी के विचार लोकतंत्र की आत्मा को बचाने का मार्ग सुझाते हैं। "गांधीजी का लोकतंत्र वह है जिसमें सबसे कमजोर व्यक्ति को भी आवाज़ मिले, निर्णय में भागीदारी मिले, और शासन में विश्वास हो।"

तालिका–02

वर्तमान लोकतंत्र की समस्याओं के समाधान में गांधीजी की प्रासंगिकता		
1	लोकतांत्रिक संकट	गांधीवादी समाधान
2	राजनीतिक भ्रष्टाचार	नैतिक राजनीति, स्वावलंबन
3	साम्प्रदायिकता और ध्रुवीकरण	सर्वधर्म समभाव
4	सत्ता का केंद्रीकरण	विकेंद्रीकरण, ग्राम स्वराज
5	नागरिक उदासीनता	सेवा और नागरिक कर्तव्य की शिक्षा
6	आर्थिक विषमता	ट्रस्टीशिप, उत्पादन का विकेन्द्रन

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

गांधीजी के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता– 21वीं सदी में वैश्विक राजनीति, समाज और पर्यावरण के सामने कई जटिल चुनौतियाँ उभर कर आई हैं जैसे राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असमानता, नैतिक पतन, पर्यावरणीय संकट और हिंसा का प्रसार। इन सभी संकटों के बीच महात्मा गांधी के विचार आज भी एक प्रासंगिक, व्यावहारिक और नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यद्यपि गांधीजी का युग भिन्न था, किंतु उनके सिद्धांत सार्वकालिक हैं और वर्तमान समय में भी उतने ही आवश्यक हैं जितने वे स्वतंत्रता संग्राम के दौर में थे।

1. राजनीति में नैतिकता की आवश्यकता– आज की राजनीति में सत्ता, लाभ और स्वार्थ प्रमुख प्रेरक तत्व बनते जा रहे हैं, जिससे जनता और शासकों के बीच विश्वास की खाई बढ़ रही है। गांधीजी ने राजनीति में सत्य, आत्मसंयम और नैतिकता की अनिवार्यता पर बल दिया था। उनका मानना था कि राजनीति का उद्देश्य जनसेवा और नैतिक उत्थान होना चाहिए, न कि केवल सत्ता प्राप्ति।

वर्तमान संदर्भ– भ्रष्टाचार, पक्षपात और राजनीतिक हिंसा की बढ़ती घटनाओं के बीच गांधीजी की नैतिक राजनीति की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

2. अहिंसा की वैश्विक प्रासंगिकता– गांधीजी का सबसे शक्तिशाली हथियार अहिंसा था, जो उन्होंने न केवल औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध प्रयोग किया, बल्कि उसे एक सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि हिंसा से स्थायी समाधान संभव नहीं, जबकि संवाद, करुणा और आत्मबल से स्थायी परिवर्तन संभव है।

वर्तमान संदर्भ– आतंकवाद, युद्ध, नस्लीय तनाव और धार्मिक कट्टरता के युग में अहिंसा की विचारधारा ही वैश्विक शांति की राह प्रशस्त कर सकती है।

3. ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकरण– गांधीजी ने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की थी जहाँ गांव आत्मनिर्भर हों, और सत्ता नीचे से ऊपर की ओर संचालित हो। उन्होंने विकेंद्रीकरण और स्थानीय स्वराज को लोकतंत्र की रीढ़ माना।

वर्तमान संदर्भ– विकेन्द्रित प्रशासन, पंचायती राज और स्थानीय शासन की सफलताएं दिखाती हैं कि गांधीजी का दृष्टिकोण आज भी लोकतंत्र को जनसंपर्कयुक्त और उत्तरदायी बनाने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

4. आर्थिक न्याय और ट्रस्टीशिप सिद्धांत– गांधीजी ने यह स्पष्ट किया था कि पूंजी केवल कुछ हाथों में केंद्रित न रहे, बल्कि उसका उपयोग जनहित में हो। उन्होंने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार अमीर वर्ग समाज के प्रति नैतिक रूप से उत्तरदायी बने।

वर्तमान संदर्भ– वैश्विक पूंजीवाद, धन की असमानता और अमीर–गरीब के बीच बढ़ती खाई को देखते हुए गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत आर्थिक न्याय के लिए प्रासंगिक है।

5. स्वदेशी और आत्मनिर्भरता– गांधीजी ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और स्थानीय उत्पादन को आत्मनिर्भरता की कुंजी बताया। उनके लिए स्वदेशी केवल एक आर्थिक नीति नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक स्वाभिमान का प्रतीक थी।

वर्तमान संदर्भ– COVID–19 महामारी और वैश्विक आपूर्ति शृंखला के संकट ने 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों को बल दिया, जो गांधीजी की सोच की आधुनिक प्रतिध्वनि है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

6. पर्यावरणीय संतुलन और सादगी– गांधीजी का जीवन सादगी, संयम और प्रकृति के प्रति सम्मान का प्रतीक था। उन्होंने उपभोग की संस्कृति की आलोचना की और "धरती हर व्यक्ति की आवश्यकता पूरी कर सकती है, किंतु किसी एक के लोभ की नहीं" जैसे विचार प्रस्तुत किए।

वर्तमान संदर्भ– जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के युग में गांधीजी की सादगी और सीमित उपभोग की जीवनशैली को अपनाना अनिवार्य होता जा रहा है।

महात्मा गांधी के विचार किसी विशेष काल या राष्ट्र तक सीमित नहीं हैं। वे मानवता के सार्वभौमिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित हैं। आज जब विश्व असमानता, हिंसा, पर्यावरणीय विनाश और नैतिक पतन के संकट से जूझ रहा है, तब गांधीजी के सिद्धांत, अहिंसा, स्वराज, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, और सादगी हमें एक अधिक न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और टिकाऊ लोकतंत्र की ओर ले जा सकते हैं।

अनुशंसाएं–

1. लोकतंत्र में नैतिकता की पुनर्स्थापना– गांधीजी के विचारों में राजनीति का नैतिक आधार सर्वप्रमुख था। आज के समय में राजनीतिक भ्रष्टाचार, अवसरवाद और सत्ता केंद्रित प्रवृत्तियों को चुनौती देने के लिए राजनीतिक दलों और नेताओं में सत्य, सेवा और त्याग की संस्कृति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। चुनावी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, स्वच्छ चुनावी फंडिंग, और अपराध मुक्त प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए कानूनी सुधार आवश्यक हैं।

2. ग्राम स्वराज की अवधारणा को पुनर्जीवित करना– गांधीजी का मानना था कि सच्चा लोकतंत्र गाँवों से शुरू होता है। अतः पंचायती राज संस्थाओं को वित्तीय, प्रशासनिक और विधिक स्वायत्तता प्रदान करनी चाहिए। स्थानीय शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और कृषि योजनाओं को ग्राम स्तर पर विकेंद्रीकृत करना होगा।

3. नागरिक चेतना और भागीदारी को प्रोत्साहित करना– लोकतंत्र तभी सशक्त होता है जब नागरिक सक्रिय, जागरूक और उत्तरदायी हों। इसके लिए स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर ष्नागरिक शिक्षाष को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जाए। युवाओं को गांधीजी की रचनात्मक गतिविधियों जैसे सफाई, ग्राम सेवा, खादी, और सत्याग्रह के सैद्धांतिक अभ्यास से जोड़ा जाए।

4. धर्मनिरपेक्षता और सर्वधर्म समभाव का व्यावहारिक प्रशिक्षण– सांप्रदायिकता और जातीय विभाजन की राजनीति से लोकतंत्र को खतरा है। गांधीजी का "सर्वधर्म समभाव" का सिद्धांत आज और भी अधिक प्रासंगिक है। इसके लिए स्कूलों, सरकारी अधिकारियों, पुलिस व सेना आदि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में धार्मिक सहिष्णुता और विविधता का सम्मान अनिवार्य किया जाए।

5. शिक्षा में गांधीवादी मूल्य शामिल करना– शिक्षा प्रणाली में गांधीजी के श्रम, स्वावलंबन, अहिंसा और सत्य पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार किए जाएं। केवल ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण पर बल दिया जाए।

6. ट्रस्टीशिप और वैकल्पिक अर्थव्यवस्था की दिशा में प्रयास– आर्थिक विषमता से लोकतंत्र कमजोर होता है। गांधीजी की ट्रस्टीशिप अवधारणा को सामाजिक उत्तरदायित्व, नीतिगत न्याय के रूप में आधुनिक रूप देना चाहिए। स्थानीय उत्पादन, खादी, लघु उद्योग, और प्राकृतिक संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण पर आधारित वैकल्पिक विकास मॉडल को बढ़ावा दिया जाए।

7. गांधीवादी आंदोलनों को संस्थागत समर्थन– वर्तमान समय में जो सामाजिक आंदोलनों (पर्यावरण, दलित अधिकार, किसान, शिक्षा) गांधीवादी मूल्यों पर आधारित हैं, उन्हें संस्थागत मान्यता, संरक्षण और संवाद मंच उपलब्ध कराना चाहिए।

8. वैश्विक लोकतंत्र के लिए गांधीजी की विचारधारा का प्रचार– भारत को वैश्विक मंचों (जैसे UN, UNESCO) पर गांधीजी के सिद्धांतों, अहिंसा, न्याय, पर्यावरण संतुलन, और मानवता के सार्वभौमिक मूल्य को बढ़ावा देना चाहिए। "गांधी पीठ" या "गांधी चेयर" जैसी अकादमिक संस्थाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित किया जाए।

यदि भारत गांधी के लोकतंत्र के दर्शन को पूरी तरह अपनाता है, जिसमें नैतिकता, विकेंद्रीकरण, और आत्मशासन प्रमुख हैं, तो न केवल भारत का लोकतंत्र और अधिक गहराई प्राप्त करेगा, बल्कि यह समूचे विश्व के लिए एक वैकल्पिक आदर्श भी प्रस्तुत कर सकता है।"

अंततोगत्वा महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार न केवल उनके समय के लिए प्रासंगिक थे, बल्कि वे आज भी वैश्विक लोकतंत्र के लिए एक नैतिक मार्गदर्शन प्रस्तुत करते हैं। गांधीजी ने राजनीति को केवल सत्ता और प्रशासन का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे एक नैतिक और आत्मिक साधना के रूप में देखा। उन्होंने सत्य, अहिंसा, आत्म–नियंत्रण, जन–भागीदारी, विकेंद्रीकरण, ग्राम स्वराज और आर्थिक ट्रस्टीशिप जैसे सिद्धांतों के माध्यम से एक ऐसी राजनीति का स्वरूप प्रस्तुत किया जो जनता के निकट, नैतिक रूप से उत्तरदायी और मानव–मूल्यों से जुड़ी हुई है। वर्तमान समय में जब लोकतंत्र अनेक संकटोंकृ जैसे सत्ता का केंद्रीकरण, सामाजिक विषमता, राजनीतिक नैतिकता का अभाव, और पर्यावरणीय संकटकृसे जूझ रहा है, तब गांधीजी की विचारधारा एक दिशा–सूचक की भूमिका निभा सकती है। उनका यह विश्वास कि लोकतंत्र जनता के नैतिक और सामाजिक विकास का माध्यम होना चाहिए, आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता संग्राम के समय था।

गांधीजी का "स्वराज" केवल राजनीतिक स्वाधीनता नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, आत्म–जागरण और नैतिक आत्मशासन का प्रतीक है। उनकी "ग्राम स्वराज" की कल्पना एक समावेशी, विकेन्द्रीकृत और सहभागिता पर आधारित लोकतंत्र का आदर्श मॉडल प्रस्तुत करती है, जो सत्ता को जनसंपर्क के निकट लाता है। ट्रस्टीशिप के माध्यम से उन्होंने आर्थिक लोकतंत्र और सामाजिक न्याय का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जो आज के पूंजीवादी विश्व में असमानता को दूर करने का सार्थक उपाय बन सकता है।

इस शोध में यह स्पष्ट हुआ है कि गांधीजी के राजनीतिक सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र को केवल संस्थागत नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में सहायक हो सकते हैं। उनकी विचारधारा केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए एक मूल्य–आधारित, सह–अस्तित्वपूर्ण और टिकाऊ लोकतंत्र की प्रेरणा है। अतः आज की पीढ़ी और नीति–निर्माताओं को गांधीजी के विचारों से सीख लेकर लोकतंत्र को अधिक जनोन्मुखी, न्यायपूर्ण और नैतिक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ सूची–

1– गांधी, महात्मा। हिंद स्वराज। नवजीवन प्रकाशन मंडल, अहमदाबाद, 1909। ISBN: 9788172290007

2– गांधी, महात्मा। मेरे सत्य के प्रयोग (The Story of My Experiments with Truth)। नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1940। ISBN: 9788172290083

3– पारीक, जानकी। गांधीजी के विचार और वर्तमान युग। वाणी प्रकाशन, 2011। ISBN: 9789380143690

कुमार, रवींद्र। गांधीजी का राजनीतिक दर्शन। भारत विद्या भवन, वाराणसी, 2002। ISBN: 9788123007797

4- Sharma Sudhir- गांधीवाद और लोकतंत्र की चुनौतियाँ। साहित्य भवन, इलाहाबाद, 2017। ISBN: 9789386724169

5- Tiwari, Pramod Kumar- महात्मा गांधी और ग्राम स्वराज। साहित्य संगम प्रकाशन, 2020। ISBN: 9789388704251

6- Brown, Judith M- Gandhi: Prisoner of Hope A Yale University Press, 1991 | ISBN: 9780300051255

7- Dalton, Dennis- Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action A Columbia University Press, 1993 | ISBN: 9780231067470

8- Parel, Anthony J- Gandhi*s Philosophy and the Quest for Harmony A Cambridge University Press] 2006 | ISBN: 9780521850324

9- Bhattacharya, Sabyasachi (Ed-)- The Mahatma and the Poet: Letters and Debates between Gandhi and Tagore 1915–1941A National Book Trust] 1997 | ISBN: 9788123711465

10- Chatterjee, Partha- Nationalist Thought and the Colonial World A Oxford University Press, 1986 | ISBN: 9780195616342

11- B-R- Nanda- Gandhi and His Critics A Oxford University Press, 1990 | ISBN: 9780195622305

12- Collected Works of Mahatma Gandhi (CWMG) A Ministry of Information and Broadcasting, Government of India (100 Volumes) A ISBN (Set) 9788172290014

13- United Nations- Gandhi and the United Nations: A Global Legacy A UN Publications 2019 | ISBN: 9789211013981